201hi02

2

दोहे

पिछले पाठ में आपने एक कहानी पढ़ी। इस पाठ में हम दोहे को पढ़ेंगे जो कि हिंदी का एक प्रमुख छंद है। कबीर, रहीम, वृंद आदि मध्यकालीन हिंदी कवियों ने अपनी कविताओं में ज्यादातर इसी छंद का प्रयोग किया है। प्रायः दोहों के विषय भक्ति, शृंगार और नीति के रहे हैं। इस पाठ में हम कबीर, रहीम और वृंद के नीति या उपदेशपरक दोहों का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- व्यक्तित्व-निर्माण में निंदा और आलोचना की भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे;
- बड़ों द्वारा किए गए कठोर व्यवहार के सकारात्मक पक्ष को स्पष्ट कर सकेंगे;
- अनावश्यक धन से उत्पन्न विकृतियों को समझकर धन की उपयोगिता पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- अवसरानुकूल व्यवहार के औचित्य का वर्णन कर सकेंगे;
- जीवन में अभ्यास का महत्त्व रेखांकित कर सकेंगे;
- दोहा छंद को पहचान कर उनके प्रयोग के बारे में व्याख्या कर सकेंगे;
- दोहों के काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- समान भाव के दोहों की तुलना कर सकेंगे और उनका अवसरानुकूल प्रयोग कर सकेंगे।

2.1 मूल पाठ

आइए, एक बार इन दोहों को पढ़ लें :

दोहे

ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होइ ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदै सोइ ।। 1।।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करत सुभाय ।। 2।।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ।। 3।।

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम ।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम ।। 4।।

—कबीर

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।। 5।।

खैर, खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान।। 6।।

—रहीम

करत-करत अभ्यास तें, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात तें, सिल पर परत निसान।। 7।।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली-बुरी कहि देत।। 8।।

—वृंद

टिप्पणी

शब्दार्थ

जनमिया = जन्मा
सुबरन = स्वर्ण, सोना
कलस = कलश, घड़ा
सुरा = शराब
निंदै = निंदा करता है
सोई = उसे, उसकी
नियरे = पास
छवाय = बनाकर
सुभाय = स्वभाव
सिष = शिष्य
कुंभ = घड़ा
काढ़ै = निकालता है
खोट = दोष, कमी
सयानो = समझदार
पावस = वर्षा ऋतु
कोइल = कोयल
मौन = चुप्पी
दादुर = मेंढक
बक्ता = वक्ता, बोलने वाला
खैर = कत्था। खैर और ख़ैर दो अलग-अलग मूल के शब्द हैं। ''खैर'' (बिना नुक्ता लगाए) मूलतः हिंदी का शब्द है, जिसका अर्थ होता है— 'कत्था' (इसे पान में डालकर खाया जाता है। दूसरा शब्द है ख़ैर (नुक्ता सहित), जो अरबी मूल का शब्द है, जिसका अर्थ है— कुशलता। यहाँ रहीम ने कत्थे के अर्थ में 'खैर' का प्रयोग किया है।
मदपान = मदिरापान (नशा)
सकल = सारा
जहान = संसार
जड़मति = मूर्ख
सुजान = चतुर, समझदार
रसरी = रस्सी
सिल = पत्थर
निसान = निशान, चिह्न
हिय = हृदय, मन
हेत-अहेत = हित-अहित, भलाई-बुराई
निरमल = निर्मल, स्वच्छ
आरसी = आईना, दर्पण

टिप्पणी

2.2 आइए समझें

2.2.1 अंश-1

दोहा-1

आइए, कबीरदास का प्रथम दोहा एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

ऊँचे कुल का जनमिया,
करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा,
साधू निंदै सोइ।।

चित्र 2.1

कबीर कहते हैं कि अगर अच्छे घर-ख़ानदान में पैदा हुए व्यक्ति का व्यवहार और उसके कर्म अच्छे न हों, तो वह उसी प्रकार निंदा का पात्र होता है, जिस प्रकार शराब भरे सोने के कलश को सज्जन निंदनीय समझते हैं। कहने का मतलब है कि जिस प्रकार सोने का घड़ा भी अपने अंदर शराब जैसी वस्तु भरी होने के कारण अपनी महत्ता खो देता है और बुराई का पात्र बनता है, उसी प्रकार अच्छे कुल या परिवार में जन्म लेने वाले व्यक्ति का आचरण अगर अच्छा न हो, तो वह भी लोगों की तारीफ़ का नहीं, बल्कि निंदा का पात्र बन जाता है।

इस दोहे में कवि ने बताया है कि आदमी की पहचान उसके घर-ख़ानदान से, उसके वर्ण और जाति से, उसके धनवान और निर्धन होने से नहीं; बल्कि उसके आचरण, उसके व्यवहार और चाल-चलन से होती है। अच्छे कर्म करने वाले व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है और बुरे कर्म करने वाले की निंदा होती है।

टिप्पणी

1. मनुष्य के बारे में अपनी बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए कबीर ने इस दोहे में सोने के कलश का उदाहरण दिया है। जब किसी बात को समझाने के लिए जीवन-जगत् के किसी दूसरे व्यवहार को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे दृष्टांत कहते हैं। अतः यहाँ **दृष्टांत अलंकार** का प्रयोग है।

टिप्पणी

2. मनुष्य का तन सोने के घड़े जैसा है। ऐसा तन पाकर उसमें अच्छाई का विकास करने की जगह उसे बुराइयों का घर बनाना किसी भी तरह प्रशंसा की बात नहीं हो सकती।

3. बहुत आसान तरीके से अच्छे कर्म करने की बात कही गई है।

दोहा-2

आइए दूसरा दोहा फिर से पढ़ लें।

निंदक नियरे राखिए,
आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना,
निरमल करत सुभाय।।

आपने अनुभव किया होगा कि अधिकतर लोगों को अपनी प्रशंसा बहुत अच्छी लगती है, जबकि अपनी आलोचना करने वालों को कोई पसंद नहीं करता। यों भी समाज में ऐसे लोग तो अक्सर मिल जाते हैं, जो मुँह पर तारीफ़ करते हैं और पीठ-पीछे निंदा। मगर, ऐसे लोग बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, जो सामने ही हमारी आलोचना करें, हमारी कमियाँ बताएँ। प्रायः हम ऐसे लोगों से मिलने से कतराते हैं, उन्हें पसंद नहीं करते।

चित्र 2.2

कबीर ने ऐसे आलोचकों से बचने की नहीं, बल्कि उनको अपने नज़दीक रखने की आवश्यकता पर बल दिया है। वे कहते हैं कि निंदक को तो आँगन में कुटी बनवाकर अपने पास ही रखना चाहिए, निंदा से हमें अपनी कमियों का पता चलता है और हम उन्हें दूर कर लेते हैं। इस प्रकार, साबुन और पानी के बिना ही वे हमारे स्वभाव को निर्मल बना देते हैं।

अब ज़रा सोचिए कि आदमी अपना शरीर तो साबुन-पानी से साफ़ कर लेता है, पर वह अपने व्यवहार, आदतों और स्वभाव की कमियों और बुराइयों से कैसे छुटकारा पाए? आदमी को अपनी कमियाँ, कमज़ोरियाँ, बुराइयाँ ख़ुद तो दिखती नहीं। दूसरे लोग आम तौर पर उसके सामने इनका उल्लेख नहीं करते। केवल आलोचक ही हैं, जिनसे हमें पता चलता है कि हममें कहाँ और क्या कमी है? तो फिर उनसे कतराएँ क्यों? क्यों न उनकी सुनें, जिससे हमें अपनी कमियों का पता चले और हम उनको दूर करने का प्रयास करें और अपने स्वभाव को निर्मल बनाएँ। इस दोहे में कबीर हमसे यही कहना चाहते हैं।

टिप्पणी

टिप्पणी

1. प्रस्तुत दोहे में निंदक से दूर रहने के प्रचलित रिवाज़ के विपरीत उससे लाभ उठाने का संदेश दिया गया है।
2. कविता में जहाँ पास-पास आने वाले शब्दों में एक ही वर्ण का बार-बार दुहराव (आवृत्ति) हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। यहाँ 'निंदक नियरे' में 'न' वर्ण की आवृत्ति से **अनुप्रास अलंकार** है।
3. प्रस्तुत दोहे में 'आत्म-बोध' और 'विश्लेषणात्मक चिंतन' जैसे जीवन-कौशलों को उभारा गया है।

क्रियाकलाप-2.1

कोई परिचित या अपरिचित व्यक्ति जब आपकी किसी गलती की ओर इशारा करता है, तो आपको कैसा लगता है? कबीर के इस दोहे को पढ़ें और इस संदर्भ में अपनी प्रतिक्रिया लिखें:

.....

.....

.....

.....

.....

दोहा-3

आइए, तीसरा दोहा एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है,
गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै,
बाहर बाहै चोट।।

हमेशा से एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को अपना अनुभव और ज्ञान सौंपती आ रही है। ज्ञान देने वाले व्यक्ति को गुरु कहते हैं अर्थात् गुरु वह होता है, जो ज्ञान दे, ज्ञान को धारण करने लायक बनाए, जो चरित्र-निर्माण करे और बेहतर मनुष्य बनाए।

कबीर ने अपने इस दोहे में गुरु-शिष्य संबंध और गुरु के कार्य के विषय में बताया है। जिस प्रकार कुम्हार घड़ा बनाता है, उसी प्रकार गुरु शिष्य को तैयार करता है।

आपने कुम्हार को घड़ा बनाते देखा है? अगर नहीं, तो चित्र 2.3 को ध्यानपूर्वक देखिए। वह चाक पर गीली मिट्टी रखता है और चाक को घुमाता है। बीच-बीच में हाथ से मिट्टी के उस लोंदे को आकृति देता जाता है। जैसे-जैसे यह आकृति स्पष्ट होती है और उसका आकार बढ़ता है, वैसे-वैसे उसे सँभालने के लिए विशेष प्रयत्न करना होता है, वरना आकृति बिगड़ सकती है। घड़ा बना चुकने पर जब वह उसे चाक से उतारता है, तो घुमा-घुमा कर उसकी कमियों को परखता है। अक्सर कहीं-कहीं मिट्टी के बीच हवा आ जाने से छेद रह जाते हैं। वह उन्हें देखता है और ढूँढ-ढूँढ कर निकालता है, उन्हें दूर करता है। वह भीतर की तरफ़ से हाथ का सहारा देता जाता है, ताकि घड़ा

टिप्पणी

टूट न जाए और बाहर की तरफ़ से थपकी से चोट करता जाता है। तब कहीं जाकर एक सुंदर और दोष-रहित घड़ा तैयार होता है।

प्रस्तुत दोहे में कबीर कहते हैं कि गुरु कुम्हार है और उसकी रचना यानी उसका शिष्य घड़ा है। शिष्य को तैयार करते हुए गुरु उसकी ख़ामियों, उसके दोषों को दूर करता जाता है। 'काढ़ना' का अर्थ निकालना होता है (जैसे–दूध काढ़ना)। ऐसा करते हुए वह अपने शिष्य को भीतर-भीतर तो सहारा देता है यानी आंतरिक रूप से स्नेह देता है, पर बाहर से ठोकता चलता है। कहने का अर्थ है कि गुरु का व्यवहार ऊपर से तो कठोर लगता है, पर आंतरिक रूप से बड़ा स्नेहपूर्ण होता है। वह अपने शिष्य की तमाम कमियों और कमज़ोरियों को अपने कठोर नियंत्रण से दूर कर देता है और उसे ज्ञान देने के साथ-साथ आत्मिक और चारित्रिक रूप से भी दृढ़ बना देता है।

चित्र 2.3

'गढ़ना' शब्द का अर्थ सिर्फ़ बनाना नहीं होता, बल्कि पूरी आत्मीयता से दोषरहित कृति तैयार करना होता है–जैसे अच्छा मूर्तिकार मूर्ति गढ़ता है, तो उसे सजीव और जीवंत बना देता है; सुनार आभूषण में कलात्मक सौंदर्य उभारता है। इसीलिए यहाँ कवि ने गुरु द्वारा शिष्य को गढ़ने की बात कही है। अच्छा गुरु शिष्य को कोरा ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि उसे समाज और दुनिया के लिए एक बेहतर इंसान के रूप में तैयार करता है। यहाँ ज्ञानवान बनाने के साथ-साथ चरित्रवान बनाने का भी संकेत है। जैसे घड़े में अगर नन्हे-नन्हे छेद रह जाएँ, तो उससे पानी रिसेगा और उसकी उपयोगिता कम या समाप्त हो जाएगी, वैसे ही ज्ञान अगर आचरण या व्यवहार पर खरा नहीं उतरेगा, तो उसकी भी सामाजिक उपयोगिता नहीं रहेगी।

टिप्पणी

1. कबीर ने इस दोहे में कुम्हार और घड़े के माध्यम से गुरु और शिष्य के संबंध को तो आसानी से समझाया ही है, ज्ञान की सामाजिक उपयोगिता यानी व्यवहार की कसौटी पर ज्ञान के खरे उतरने पर भी बल दिया है।

2. कबीर ने अपने काव्य में गुरु को अत्यधिक महत्त्व दिया है। गुरु की महिमा को व्यक्त करने वाला यह दोहा आपने पढ़ा या सुना होगा, जिसमें उन्होंने गुरु को ईश्वर से भी अधिक महत्त्व दिया है–

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

टिप्पणी

दोहा-4

कबीर का चौथा दोहा फिर पढ़ लेते हैं।

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।।

आप अक्सर सोचते होंगे कि अगर हमारे पास अपार दौलत होती, तो कितना मज़ा होता! क्या कभी यह भी सोचा है कि धन हमेशा ही फ़ायदेमंद नहीं होता। वह अपने साथ बहुत सी बुराइयाँ भी लाता है। अगर किसी के पास बहुत-सा पैसा हो, तो वह क्या करेगा? ज़ाहिर है कि वह पहले अपनी ज़रूरतों को पूरा करेगा, फिर अपने लिए सुविधाएँ जुटाएगा, फिर भोग-विलास और फिर बुरे शौकों (व्यसनों) को पूरा करने लगेगा। यानी, धन एक हद तक तो ज़रूरतों को पूरा करता है, लेकिन ज़्यादा पैसा होने पर आदमी सुख-सुविधा में फँसता है, केवल अपना फ़ायदा देखता है और विलासी बन जाता है। कबीर ने धन की अधिकता होने पर उससे छुटकारा पाने की या उसे दान कर देने की बात कही है। उन्होंने नाव में पानी भरने से इसकी तुलना की है। उनके अनुसार जैसे नाव में पानी भरने पर यदि पानी को बाहर न निकाला जाए, तो नाव का डूबना तय है, वैसे ही धन की अधिकता होने पर यदि दान करके उसे ख़र्च न किया जाए, तो व्यक्ति का पतन भी निश्चित है।

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि यदि नाव में पानी भरने लगे और घर में पैसे की अधिकता होने लगे, तो समझदारी इसी में है कि दोनों हाथों से उलीचना शुरू कर दीजिए। नाव में पानी बढ़ने पर उसका डूबना निश्चित है, इसलिए जैसे ही पानी भरने लगता है, नाविक उसे दोनों हथेलियाँ मिलाकर (अंजुरी बनाकर) बाहर फेंकने लगता है। इसी तरह, यदि घर के अंदर आवश्यकता से अधिक पैसा बढ़ने लगे, तो समझदार व्यक्ति को अंजुरी भर-भर कर उसे बाहर कर देना चाहिए अर्थात् दान कर देना चाहिए, क्योंकि धन की अधिकता अपने साथ ऐसी विकृतियाँ लेकर आती है, जिससे घर का विनाश होना निश्चित होता है।

टिप्पणी

1. 'नाव में जल' और 'घर में धन' जैसी दो भिन्न स्थितियों में न केवल समानता स्थापित की गई है, बल्कि इससे नीतिगत उपदेश को सरल और बोधगम्य बना दिया गया है।

2. आप जानते हैं कि नाव में वैसे तो पानी आता नहीं, पानी तभी आता है, जब उसमें छेद हो या टूट आ जाए। इसी प्रकार, घर में गलत तरीके से कमाया गया धन आ जाए, तो उसे भी घर से निकाल देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया,

चित्र 2.4

तो जो हाल पानी भरने से नाव का होगा, वही हाल गलत तरीके से आनेवाले पैसे से घर का भी होगा अर्थात् दोनों का डूबना, नष्ट होना तय है।

3. 'सयाना' का वास्तविक अर्थ है—वयस्क, बालिग, परिपक्व, समझदार आदि। यहाँ 'सयानो काम' का अर्थ है— समझदारी का काम।

4. कबीर ने धन की आवश्यकता को नकारा नहीं है, उसकी अधिकता को हानिकारक बताया है। धन मनुष्य के पास कितना हो, इस विषय में उनका यह दोहा देखिए—

साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

पाठगत प्रश्न-2.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. कबीर के अनुसार ऊँचे कुल में जन्म लेने पर भी आदमी निंदा का पात्र होता है, जब वह—

(क) अच्छे कर्म नहीं करता ☐ (ख) सुरापान करता है ☐

(ग) साधुओं का सत्संग करता है ☐

(घ) धन को इकट्ठा नहीं होने देता ☐

2. अच्छा गुरु—

(क) स्वभाव को निर्मल बनाता है ☐ (ख) घर में धन बढ़वाता है ☐

(ग) रास्ते में फूल बोता है ☐ (घ) कमियों को दूर करता है ☐

3. कबीर ने दोहे में जल की तुलना किससे की है?

(क) नाव से ☐ (ख) धन से ☐

(ग) हाथों से ☐ (घ) सयानेपन से ☐

2.2.2 अंश-2

दोहा-5

आइए, पाँचवें दोहे को ठीक से समझने के लिए उसे एक बार फिर से पढ़ लेते हैं।

यह दोहा रहीम का लिखा हुआ है। आपको पता होगा कि एक वर्ष में छह ऋतुएँ होती

टिप्पणी

हैं। इनके नाम हैं— ग्रीष्म (गरमी), पावस (वर्षा), शरद (हल्की सरदी) शिशिर, (तेज़ सरदी) हेमंत (पतझड़) और वसंत।

आपने वसंत में कोयल की कूक और वर्षा में मेंढक की टर्र-टर्र की आवाज़ें तो सुनी ही होंगी। ज़ाहिर है कि कोयल की कूक सभी को भाती है। उसके स्वर में मिठास होती है और गायन में लय। आपने प्रायः एक बार में एक ही कोयल का स्वर सुना होगा, सामूहिक स्वर नहीं। दूसरी तरफ़, मेंढक एक साथ टर्राते हैं, उनका टर्राना सुनने में बड़ा ही अरुचिकर लगता है। उस शोर में और सभी आवाज़ें दब-सी जाती हैं। इसी आधार पर कवि ने कोयल को ज्ञानवान व्यक्ति के प्रतीक के रूप में और मेंढक को शोर-शराबा करके ध्यान खींचने वालों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।

पावस देखि रहीम मन,
कोइल साधै मौन।
अब दादुर बक्ता भए,
हमको पूछत कौन।।

आइए, अब इस दोहे का अर्थ-सौंदर्य देखें।

रहीम कहते हैं कि पावस अर्थात् वर्षा ऋतु के आने पर कोयल अपने मन में यह विचार करके मौन साध लेती है कि अब तो मेंढक वक्ता हो गए हैं (जानकारी न रखते हुए भी बढ़-चढ़कर बात करने लगे हैं), अब हमें कौन पूछेगा अर्थात् अब हमारी कद्र कौन करेगा?

तात्पर्य यह है कि जब कम जानकार या अज्ञानी लोग बढ़-चढ़ कर बातें करते हुए महत्त्व पाने लगते हैं, तब ज्ञानी लोग मौन धारण कर लेते हैं; क्योंकि उनका स्वर इस शोर-शराबे में दबकर रह जाता है और न सुने जाने के कारण उनकी बात का उचित प्रभाव नहीं पड़ता।

अब सवाल उठता है कि क्या रहीम यह कहना चाहते हैं कि मूर्खों के बढ़-चढ़ कर बोलने पर विद्वान को ज्ञानपूर्ण बातें नहीं करनी चाहिए? नहीं, ऐसा नहीं है। गौर करें, पावस देखकर कोयल के मौन साधने की बात कही गई है, हमेशा के लिए नहीं। जब ऋतु बदलेगी, तो मेंढकों का टर्राना बंद हो जाएगा, फिर वसंत ऋतु आएगी और कोयल फिर पंचम स्वर में संदेश देगी। मतलब साफ़ है— विद्वान का मौन सिर्फ़ उतने समय के लिए होता है, जितने समय तक शोर-शराबा हो, बढ़-चढ़कर मूर्खतापूर्ण बातें हों। अनुकूल अवसर मिलते ही विद्वान को फिर ज्ञान और मानव–कल्याण की बातें कहनी चाहिए। इससे यह भी पता लगता है कि विद्वान अनुकूल अवसर पर ही अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करता है।

टिप्पणी

1. इस दोहे में सामान्य रूप में कोयल और मेंढक का ही ज़िक्र है, पर उसके द्वारा विद्वान और मूर्ख वाला अर्थ व्यक्त होता है। जहाँ साधारण तौर पर एक बात कही जाए, पर उसका अर्थ बिल्कुल भिन्न या अप्रत्यक्ष निकलता हो, वहाँ **अन्योक्ति अलंकार** होता है। प्रस्तुत दोहे में अन्योक्ति का बहुत सुंदर और सटीक प्रयोग है।

2. 'अब दादुर बक्ता भए' में 'बक्ता' (वक्ता) शब्द में व्यंजना का सौंदर्य निहित है। 'बोलने लगे' या 'बोलते हैं' या 'बोल रहे हैं' की जगह 'बक्ता भए' का प्रयोग

किया गया है। आपने मंच पर लोगों को बोलते देखा होगा। किसी सभा या समाज में जो व्यक्ति मंच से अपनी बात कहे, उसे वक्ता कहते हैं। व्यंजना से अर्थ निकलता है कि अब मंच मूर्खों के ही हाथ में है।

टिप्पणी

दोहा-6

खैर, खून, खाँसी, खुसी,
वैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबैं,
जानत सकल जहान।।

आइए, छठा दोहा ध्यान से पढ़ लेते हैं और इसे समझने का प्रयास करते हैं। इसमें सात चीज़ों या बातों का उल्लेख है। खैर यानी कत्था, खून, खाँसी, खुशी, वैर यानी दुश्मनी, प्रीति अर्थात् प्रेम और मद-पान यानी नशीली चीज़ का सेवन। रहीम कहते हैं कि ये सातों दबाने से नहीं दबते यानी उभर ही आते हैं। कहने का अर्थ है कि सारी दुनिया जानती है कि इन सातों को छिपाया नहीं जा सकता। ये सभी बातें समय आने पर प्रकट हो ही जाती हैं।

खैर यानी कत्था पान में प्रयोग किया जाता है और होठों को लाल करके अपनी उपस्थिति प्रकट कर देता है। ऐसे ही ख़ून भी अपने रंग को ऐसा छोड़ देता है कि उसे छिपाना संभव नहीं होता। ये तो आप जानते ही हैं कि खाँसी को भी दबाया नहीं जा सकता।

आपने ऐसे लोगों को तो देखा ही होगा जिनकी आपस में नहीं बनती और मौका पाते ही वे एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाने से नहीं चूकते। इसी को वैर कहते हैं। ऐसे लोग जब एक दूसरे के सामने आते हैं, तो उनका हाव-भाव और व्यवहार सभी के सामने उनके संबंधों को स्पष्ट कर देता है।

इसी तरह, किसी के प्रति प्रेम का भाव भी आँखों की चमक, बोलने के तरीके और व्यवहार से प्रकट हो जाता है।

आपने नशेड़ियों या शराबियों को देखा होगा। उन्हें देखते ही आपको पता लग जाता है कि इस आदमी ने ज़रूर शराब पी रखी है। उसकी चाल-ढाल, उसका बोलने का तरीका अपने आप शराब पीने की बात ज़ाहिर कर देता है।

इस तरह आपने देखा कि जिन सात बातों की चर्चा इस दोहे में की गई है, वे स्वयं ही अपने आपको व्यक्त कर देती हैं। उन्हें छिपाया नहीं जा सकता।

आपने दैनिक भाषा-व्यवहार में ध्यान दिया होगा कि किसी बात पर बल देने के लिए यह कहा जाता है—'अरे, भई! सारी दुनिया इस बात को जानती है' या 'हर कोई यह जानता है' या 'कौन इस बात को नहीं जानता' अथवा 'सभी जानते हैं' या 'सबको पता है जी' .....आदि-आदि। 'जानत सकल जहान' ऐसा ही प्रयोग है।

टिप्पणी

1. 'खैर, खून, खाँसी, खुसी' में 'ख' वर्ण का दुहराव है। अतः यहाँ **अनुप्रास अलंकार** है। आप जानते ही हैं कि जहाँ एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

पाठगत प्रश्न-2.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. रहीम के अनुसार खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति और मदपान के अतिरिक्त और कौन-सी चीज़ छिपाए नहीं छिपती?

   (क) कत्था ☐ (ग) ऊँचा कुल ☐

   (ख) खुशबू ☐ (घ) चोरी ☐

2. 'अब दादुर बक्ता भए' से कवि का क्या आशय है?

   (क) मूर्ख मंच पर आ पहुँचे ☐

   (ख) समझदारों की इज्ज़त होती है ☐

   (ग) मेंढकों ने कूकना शुरू कर दिया ☐

   (घ) कोयल ने मौन साध लिया। ☐

3. "पावस देखि रहीम मन कोइल साधै मौन
   अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन"
   – ऊपर दिए गए दोहे में कौन-सा अलंकार है?

   (क) दृष्टांत ☐ (ख) उपमा ☐

   (ग) रूपक ☐ (घ) अन्योक्ति ☐

2.2.3 अंश-3

दोहा-7

आगे बढ़ने से पहले एक प्रसिद्ध कवि वृंद का दोहा फिर से पढ़ लेते हैं।

करत-करत अभ्यास तें,
जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात तें,
सिल पर परत निसान।।

आप देख रहे हैं न कि इस दोहे में कुछ ख़ास बात कही गई है! इसमें कुछ करने पर बल दिया गया है! क्या करने पर? जी, हाँ! अभ्यास करने पर। यह अभ्यास क्या होता है, जानते हैं? कहाँ-कहाँ आपने यह शब्द पढ़ा या सुना है, याद कीजिए। अभ्यास, रियाज़ ..... अब कुछ याद आया? हाँ, संगीत में, खेल में .....

आपको पता होगा कि संगीत सीखने वाले ही नहीं, बल्कि संगीत के बड़े-बड़े पंडित और उस्ताद भी रोज़ाना रियाज़ करते हैं। रियाज़ का अर्थ अभ्यास ही होता है। आपने बड़े संगीतज्ञों का साक्षात्कार या भेंटवार्ता/इंटरव्यू सुना या पढ़ा होगा। वे बताते हैं कि वे दिन में दस से बारह घंटे तक रियाज़ (अभ्यास) करते थे। नए सीखने वालों को भी वे अभ्यास पर अधिक समय देने की सलाह देते हैं। इसी तरह आपने खिलाड़ियों को

टिप्पणी

भी देखा होगा कि वे प्रतिदिन कई घंटे का समय अपने खेल के अभ्यास पर ख़र्च करते हैं। आपने समाचारों में भी देखा-सुना होगा कि किसी भी मैच से पहले पूरी टीम एक बार अभ्यास करती है। आपको शायद यह भी पता हो कि वकील और डॉक्टर तो अपने पूरे के पूरे काम को ही प्रैक्टिस (अभ्यास) कहते हैं।

आइए, इस दोहे के भाव को समझने से पहले कुछ और बातें जान लें।

चित्र 2.5

इस दोहे में कवि ने कहा है कि अभ्यास करते-करते यानी, निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानवान बन जाता है। कवि ने मूर्ख के लिए 'जड़मति' शब्द का प्रयोग किया है। 'जड़' का एक तो आम अर्थ है—किसी भी पेड़-पौधे का वह हिस्सा जो ज़मीन के भीतर होता है और जिसके द्वारा उसे खाद-पानी मिलता है। आप जड़ और चेतन पदार्थ के इन दो भेदों के बारे में जानते हैं :

जड़— वे पदार्थ जिनके अंदर जीवन के तत्त्व नहीं होते, साधारणतः जिनमें ख़ुद बढ़ने और हिलने-डुलने की शक्ति नहीं होती।

चेतन— वे पदार्थ, जिनमें जीवन के तत्त्व होते हैं, जिनमें बढ़ने और हिलने-डुलने की शक्ति होती है।

तो 'जड़' का अर्थ है ठहरा हुआ, रुका हुआ, धड़कनरहित, बेजान। 'मति' बुद्धि को कहते हैं। अतः जड़मति का अर्थ हुआ—जिसकी बुद्धि का विकास न हुआ हो या जो मूर्ख हो। आम भाषा में इसके लिए 'ठस दिमाग' का भी प्रयोग करते हैं। आमतौर पर ऐसे व्यक्ति को मूर्ख कहते हैं। सुजान भी आप जानते ही हैं— चतुर, बुद्धिमान, विद्वान।

चलिए, अब आपको हम थोड़ा पहले के समय तक ले चलते हैं। आपने कुआँ देखा है? हाँ, ठीक है, आज इनका बहुत कम प्रयोग होता है, पर पहले पानी की ज़रूरत को कुएँ ही पूरा करते थे। एक बाल्टी या घड़ा लिया, उसमें रस्सी बाँधी और कुएँ में लटकाकर ढील देते गए। तल तक पहुँचने पर दो-तीन बार रस्सी को ऊपर-नीचे झटका दिया, बाल्टी में पानी भर गया। अब उसे ऊपर खींच लिया। आपने ऐसा करके या ऐसा होते हुए देखा है कभी? देखा है? वह तो नहीं, जिसमें रस्सी के नीचे ऊपर जाने-आने के लिए

टिप्पणी

घिरनी लगी होती है? घिरनी तो बाद में लगने लगी। उससे पहले कुएँ के चारों तरफ़ पत्थर का फ़र्श बना होता था और रस्सी के इसी पत्थर पर रगड़ खाने से पत्थर पर उतने हिस्से में गहरा गड्ढा बन जाता था।

पत्थर के लिए संस्कृत शब्द 'शिला' है, जिससे हिंदी में 'सिल' शब्द बना है।

अब इस दोहे के भाव और संदेश को हम आसानी से समझ सकते हैं :

कवि कहता है कि निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी चतुर और ज्ञानवान बन जाता है; ठीक उसी तरह, जैसे रस्सी के निरंतर आने-जाने से पत्थर पर उसका निशान बन जाता है। इसीलिए, किसी भी काम में सफलता पाने के लिए अभ्यास करना ज़रूरी है।

टिप्पणी

1. जड़मति से सुजान बनने की प्रक्रिया के लिए दैनिक व्यवहार के उदाहरण—'सिल पर परत निसान' का प्रयोग किया गया है, इसलिए यहाँ **दृष्टांत अलंकार** है।

2. क्या आपने इस बात पर ध्यान दिया है कि लिखने वाली भाषा से बोलने वाली भाषा में अंतर होता है। जी हाँ, लिखने वाली भाषा अक्सर वह होती है, जो पूरे भाषा-क्षेत्र में एक जैसी होती है। इसे 'मानक भाषा' कहते हैं। लेकिन बोली जाने वाली भाषा के दो रूप साथ-साथ मिलते हैं। एक मानक रूप और दूसरा क्षेत्रीय या स्थानीय रूप। मानक रूप हर जगह एक जैसा बोला जाता है। स्थानीय रूप अलग-अलग होते हैं, जैसे— कलकतिया हिंदी, बंबइया हिंदी आदि। इन स्थानीय रूपों के साथ ही, उसी भाषा-क्षेत्र की उपभाषाएँ होती हैं, जैसे— अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली आदि। हर क्षेत्र की उपभाषा के उच्चारण का तरीका और बोलने का लहज़ा भी अलग-अलग होता है। इस दोहे में 'रसरी' ऐसा ही शब्द है। मानक भाषा में शब्द है—रस्सी। इसी रस्सी को ब्रज में 'रसरी' बोला जाता है। दोहे की भाषा ब्रज है।

3. इस दोहे के अर्थ को जानने के संदर्भ में हमने मानक भाषा और उपभाषा में अंतर समझा है। हिंदी की उपभाषाओं को पाँच वर्गों में बाँटते हैं। इन वर्गों में शामिल उपभाषाओं के नाम इस प्रकार हैं :

1.	पश्चिमी हिंदी-वर्ग	:	खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रज, बुंदेली और कन्नौजी
2.	पूर्वी हिंदी-वर्ग	:	अवधी, छत्तीसगढ़ी और बघेली
3.	बिहारी-वर्ग	:	भोजपुरी, मगही और मैथिली (मैथिली को अब संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वतंत्र भाषा का दर्जा प्राप्त है)

4.	राजस्थानी-वर्ग	:	मेवाती, जयपुरी, मालवी और मारवाड़ी
5.	पहाड़ी-वर्ग	:	कुमाउँनी, गढ़वाली आदि

टिप्पणी

दोहा-8

आइए, कवि वृंद का अगला दोहा फिर से ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली-बुरी कहि देत।।

इस दोहे में एक शब्द आया है— 'आरसी'। 'आरसी' किसे कहते हैं, पता है? आरसी का अर्थ है— शीशा या आईना। आरसी एक आभूषण का भी नाम है, जिसे स्त्रियाँ अँगूठे में पहना करती थीं। इसमें एक शीशा (आईना) लगा होता था। अपने साज-सिंगार के लिए और अपने चेहरे को देखने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। निर्मल यानी साफ़-सुथरी आरसी वास्तव में रूप-रंग या साज-सिंगार के अच्छे या बुरे होने को प्रकट कर देती है। आप शीशा देखते हैं। क्या करता है वह, यही न कि जो जैसा है— अच्छा या बुरा, उसे प्रतिबिंबित कर देता है, बता देता है।

तब, इस दोहे का अर्थ हुआ कि आदमी के नयन यानी उसकी आँखें उसके हृदय में विद्यमान हित या अहित के भाव को पूरी तरह व्यक्त कर देती हैं। ठीक उसी तरह जैसे स्वच्छ आरसी भले या बुरे रूप-रंग को व्यक्त कर देती है। अर्थ यह है कि आदमी की आँखों से उसके मन के भावों का पता चल जाता है। प्रेम करने वालों की आँखों में चमक होती है। क्रोध हो, तो आँखें लाल हो जाती हैं। अगर शोक है, तो आँसू उमड़ आते हैं, वगैरह...वगैरह। आँखें ही व्यक्ति के मन के भाव को ठीक-ठीक प्रकट करती हैं। बिहारी भी लिखते हैं:

झूठे जान न संग्रहै, मुख सों निकसे बैन।
या ही तैं विधि ने किए, बातन को ये नैन।

मुख से निकले हुए वचन तो झूठे हो जाते हैं (क्योंकि मुँह से कोई भी चीज़ निकले वह जूठी हो ही जाती है) इन वचनों को झूठे जानकर ही कवि ने कहा है कि सच्ची बात तो आँखें ही कह सकती हैं; इसीलिए सच को व्यक्त करने के लिए ही भगवान ने ये नैन दिए हैं।

कवि इस दोहे में बताना चाहता है कि आँखें मनुष्य के हृदय के भावों को प्रकट कर देती हैं। हम उन्हें देखकर समझ सकते हैं कि वह व्यक्ति हमारे प्रति कैसा भाव रखता है।

टिप्पणी

1. 'नैना' शब्द संस्कृत के नयन से बना है, यह तद्भव रूप है। हित से हेत और अहित से अहेत भी ऐसे ही प्रयोग हैं।

2. दृष्टांत अलंकार है।

पाठगत प्रश्न-2.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अभ्यास करने का अर्थ होता है—

   (क) किसी काम को जल्दी करने लगना ☐

   (ख) कार्य-कारण संबंध सीख जाना ☐

   (ग) निरंतर कार्य करके उसमें कुशलता पाना ☐

   (घ) बहस करके सीख जाना ☐

2. हिंदी की किस उपभाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वतंत्र भाषा का दर्जा प्राप्त है?

   (क) ब्रज ☐ (ख) भोजपुरी ☐

   (ग) मैथिली ☐ (घ) कुमाउँनी ☐

2.3 दोहा छंद का परिचय

नाम	चिह्न	मात्रा
ह्रस्व (लघु)	1	1
दीर्घ (गुरु)	S	2

आपको कुछ दोहे याद हैं न? आप यह जानते हैं कि पहले कविता लिखने के लिए कवि छंदों का प्रयोग करते थे— आज भी करते हैं। छंद या तो मात्राओं, या वर्णों पर आधारित होता था और निश्चित मात्राओं या वर्णों के बाद उसमें यति (ठहराव या विराम) और तुक का पालन किया जाता था। हिंदी में अधिकांशतः मात्रिक छंदों का प्रयोग किया गया है। दोहा भी एक मात्रिक छंद है।

मात्रा का अर्थ है— उच्चारण में लिया गया समय। उच्चारण-समय के आधार पर ह्रस्व और दीर्घ इकाइयाँ होती हैं। ह्रस्व को 'लघु' भी कहते हैं और इसकी एक मात्रा गिनते हैं तथा इसके लिए '।' चिह्न का प्रयोग करते हैं। दीर्घ को 'गुरु' भी कहते हैं और इसकी दो मात्राएँ गिनते हैं तथा इसके लिए 'S' चिह्न का प्रयोग करते हैं। इसे हाशिए पर दिए गए चार्ट से आसानी से समझ सकते हैं।

तो आइए, अब हम मात्रा गिनना सीखें। हिंदी में अ, इ और उ ह्रस्व स्वर हैं, शेष सभी यानी आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं। इसलिए जहाँ अ, इ, उ अथवा इनकी मात्राओं वाले व्यंजन (क, कि, कु आदि) होंगे, वहाँ ह्रस्व अर्थात् एक मात्रा होगी। जहाँ आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ अथवा इनकी मात्राओं वाले व्यंजन (का, की, कू, के, कै, को, कौ, आदि) होंगे, वहाँ दीर्घ अर्थात् दो मात्राएँ होंगी। इसके अलावा संयुक्त व्यंजनों से पूर्व ह्रस्व (लघु) भी दीर्घ हो जाते हैं; जैसे 'अभ्यास' में 'अ' की दो मात्राएँ होंगी। इसी रक्षक, पंथी, वक्ता में क्रमशः र, पं और व भी गुरु होंगे।

टिप्पणी

अब इस दोहे पर गौर कीजिए :

।ऽ ।ऽ ऽ ऽ ।ऽ	=13
बड़ा हुआ तो क्या हुआ,	
ऽऽ ऽ। ।ऽ।	=11
जैसे पेड़ खजूर	
ऽ।। ऽ ऽऽ ।ऽ	=13
पंथिन को छाया नहीं,	
।। ऽऽ ।। ऽ।	=11
फल लागे अति दूर	

आपने देखा कि इस दोहे में दो पंक्ति और चार चरण हैं।

पहले चरण में 1 + 2 + 1 + 2 + 2 + 2 + 1 + 2 = 13 मात्राएँ हैं।

दूसरे चरण में 2 + 2 + 2 + 1 + 1 + 2 + 1 = 11 मात्राएँ हैं।

तीसरे चरण में 2 + 1 + 1 + 2 + 2 + 2 + 1 + 2 = 13 मात्राएँ हैं।

चौथे चरण में 1 + 1 + 2 + 2 + 1 + 1 + 2 + 1 = 11 मात्राएँ हैं।

अर्थात् 13, 11, 13, 11 मात्राओं वाले चार चरण हैं। हम दोहे का वाचन करते समय भी इसी हिसाब से ठहराव देते हैं। पहले 13, फिर 11, फिर 13 और फिर 11 मात्राएँ। यह दोहे को पढ़े जाने का तरीका है।

दोहे के दूसरे और चौथे चरण में अंतिम दो वर्ण क्रमशः गुरु और लघु होते हैं, जैसे इस दोहे में 'खजूर' और 'दूर' में अंत के वर्ण 'जू' और 'दू' गुरु हैं तथा 'र' लघु है।

आप ऊपर के दोहे में एक बात और देखेंगे कि दूसरे और चौथे चरण की तुक मिल रही है—**खजूर** और **दूर**। हाँ, यह भी दोहा छंद का आवश्यक नियम है।

दोहा छंद की पहचान

1. **दो-दो चरणों वाली दो पंक्तियाँ**
2. **13, 11, 13, 11 मात्राओं के चार चरण**
3. **दूसरे और चौथे चरण के अंत में गुरु के पश्चात् लघु मात्रा (ऽ।)**
4. **दूसरे और चौथे चरण की तुक में समानता**

क्रियाकलाप-2.2

आपने मात्राएँ गिनना और दोहा छंद को पहचानना सीख लिया है। निम्नलिखित छंदों की मात्राएँ गिनिए और बताइए कि कौन छंद दोहा नहीं है—

(क) साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

(ख) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।

(ग) रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावत मान बिनु।

जो विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।

आपने क्या सीखा

1. मनुष्य की पहचान उसके कुल, वर्ण और जाति से नहीं, बल्कि उसके कर्म और व्यवहार से होती है।
2. हमें अपनी आलोचना से घबराना नहीं चाहिए और न ही उसका बुरा मानना चाहिए, बल्कि उन कमियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।
3. हमें ज्ञान के साथ-साथ अपने व्यवहार और चरित्र को भी श्रेष्ठ बनाना चाहिए। व्यवहार की कसौटी पर खरा उतरकर ही ज्ञान उपयोगी होता है।
4. धन आवश्यकता के अनुसार ही अच्छा होता है। उससे अधिक होने पर व्यसन पालने की अपेक्षा दान देना बेहतर है।
5. ज्ञान की बातें करना वहीं अच्छा होता है, जहाँ उनको सुनने-समझने वाले हों।
6. प्रेम और शत्रुता के भाव छिपाए नहीं जा सकते।
7. निरंतर अभ्यास से मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है और वह ज्ञानी बन जाता है।
8. आँखों से मनुष्य के मन के भावों का पता चल जाता है।
9. दोहा छंद में 13, 11, 13, 11 मात्राओं की यति के साथ चार चरण होते हैं तथा दूसरे और चौथे चरण के तुक समान होते हैं।
10. कबीर, रहीम और वृंद ने दोहों में आसान शब्दों में और उदाहरणों के माध्यम से नीति और सामाजिक व्यवहार की गूढ़ बातें बताई हैं।
11. संस्कृत के शब्दों के यथावत रूप **तत्सम** शब्द और ध्वनि के आधार पर बदले हुए रूप **तद्भव** शब्द कहे जाते हैं।
12. हिंदी की अनेक उपभाषाएँ हैं।
13. उदाहरणों (दृष्टांतों) और अलंकारों से भाषा और अभिव्यक्ति का सौंदर्य बढ़ जाता है।

योग्यता-विस्तार

- लगभग 1000 साल से हिंदी भाषा में साहित्य रचा जा रहा है। आसानी के लिए हम इस समय को चार बड़े भागों में बाँट लेते हैं। ये हैं—आदिकाल, भक्तिकाल,

टिप्पणी

रीतिकाल और आधुनिक काल। भक्तिकाल और रीतिकाल को मिलाकर मध्यकाल भी कहते हैं। कबीर, रहीम और वृंद मध्यकाल के कवि हैं।

- कबीर ने अपने काव्य में भक्ति और नीति का उपदेश दिया है। इतना समय बीत जाने पर भी आम जन-जीवन में किसी बात को समझाने और उस पर बल देने के लिए उनके उपदेशपरक दोहों का प्रयोग आज भी किया जाता है।

- हिंदी भाषा यों तो पूरे भारत में ही समझी और बोली जाती है, पर विशेषतः उन क्षेत्रों को, जहाँ के रहने वालों की मातृभाषा हिंदी या उसकी उपभाषाएँ हैं—हिंदीभाषी प्रदेश कहते हैं। हिंदीभाषी प्रदेश हैं—हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़। हिंदी भाषी प्रदेश से सटे हुए क्षेत्रों में काश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, तेलुगु, बांग्ला और ओड़िया भाषाएँ बोली जाती हैं। इनके अतिरिक्त हमारे देश में तमिल, कन्नड, मलयालम, कोंकणी, असमिया, मणिपुरी, नागा, मिजो आदि भाषाएँ बोली जाती हैं।

- हिंदी के साथ-साथ हिंदीभाषी प्रदेशों में उर्दू भाषा का भी चलन है। यह कई हिंदी भाषी प्रदेशों की द्वितीय राजभाषा भी है। हिंदी और उर्दू के व्याकरण और शब्द-भंडार में काफ़ी समानता है और वाक्य-रचना के नियम भी काफ़ी हद तक समान हैं, लेकिन दोनों की लिपि अलग-अलग है। हिंदी भाषी प्रदेशों में बोलचाल के स्तर पर प्रायः दोनों के मिले-जुले रूप का प्रयोग किया जाता है, जिसे 'हिंदुस्तानी' कहते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित दोहे का भाव स्पष्ट करते हुए अपनी टिप्पणी कीजिए:

   निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
   बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करत सुभाय।।

2. 'गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट—' पंक्ति में 'गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट' का आशय स्पष्ट कीजिए। गुरु–शिष्य के संबंध का आदर्श रूप क्या है?

3. ''जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।।
   दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।।''
   — इस दोहे में धन के अर्थ में 'दोऊ हाथ उलीचिए' से क्या अभिप्राय है?

4. 'करत-करत अभ्यास तें...' दोहे में मूर्ख के लिए 'जड़मति' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है?

टिप्पणी

5. निम्नलिखित दोहे में निहित भाव-सौंदर्य का उल्लेख करते हुए अपने अनुभव के आधार पर प्रस्तुत कीजिए :

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।।
जैसे निर्मल आरसी, भली-बुरी कहि देत।।

6. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम शब्द छाँटकर लिखिए :

कुल, सुरा, गुरु, कुम्हार, कुंभ, निदंक, सुभाय, जल, घर, हाथ, काम, पावस, मौन, खून, प्रीति, जहान।

7. निम्नलिखित दोहों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कबिरा गर्व न कीजिए, काल गहे कर केस।
क्या जानौं कित मारिहै, क्या घर क्या परदेस।।

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुन इठलैहैं लोग सब, बाँट न लइहै कोय।।

प्रश्न

(i) 'काल गहे कर केस' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ii) कबीर ने घमंड करने के लिए क्यों मना किया है?

(iii) मन की व्यथा को छिपाकर क्यों रखना चाहिए।

7. हिंदी की उपभाषाओं का वर्गवार उल्लेख कीजिए।

8. नीचे दिए गए दोहे में ह्रस्व और दीर्घ का चिह्न अंकित करके मात्राएँ गिनिए :

जो जल बाढ़ै नाव में घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए यही सयानो काम।।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 1. (क) 2. (घ) 3. (ख)

2.2 1. (क) 2. (क) 3. (घ)

2.3 1. (ग) 2. (ग)